अध्याय 34

पुनः स्थापन: परमेश्वर का वाचा को नया करना

अध्याय 34 इस्राएल के विश्वासघात के बाद उसके पुनः स्थापन के विवरण का समापन करता है। परमेश्वर ने मूसा को पर्वत के ऊपर बुलाया, जहाँ पर वह एक बार फिर से पत्थर की दो तख्तियों पर दस आज्ञाएँ लिखेगा (34:1-4)। परमेश्वर ने स्वयं के अनुग्रहकारी होने की घोषणा की जो दोषी को दण्ड भी देता है (34:5-7)। मूसा ने परमेश्वर से लोगों को क्षमा करने की विनती की (34:8, 9), और परमेश्वर ने कहा कि वह इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधेगा और उनके सामने कनान की जातियों को बाहर निकाल देगा (34:10, 11)। उन्हें उन मूर्तिपूजक देशों के साथ कोई वाचा नहीं बांधनी थी (34:12-17)।

परमेश्वर ने आराधना पर बल देते हुए, उन विधियों और नियमों में से कुछ को दोहराया जो उसने पहले मूसा को दिए थे (34:18-26)। मूसा जब चालीस दिन और चालीस रातों तक पर्वत पर था तो उसने उस दौरान परमेश्वर के वचनों को लिख लिया था (34:27, 28)। जैसे ही वह पर्वत से उतरा, परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के कारण उसका मुँह चमक रहा था (34:29, 30, 33-35)। उसने लोगों के सामने व्यवस्था के वचनों का फिर से विवरण दिया (34:31, 32)।

इस्राएल के पाप के बाद, परमेश्वर से पुनर्मिलाप के एक कार्य की आवश्यकता थी। अध्याय 34 अध्याय 24 में दर्ज किए गए वाचा के अनुसमर्थन समारोह के आभासी दोहराव का वर्णन करता है। पर्वत के ऊपर जाना और वहाँ पर परमेश्वर का उससे मिलना दोनों को मूसा की पहल मूसा के द्वारा की गई थी। दोनों बार, परमेश्वर ने मूसा को नियमों की एक श्रृंखला दी, और वे नियम लिख लिए गए और इसके बाद लोगों के सामने प्रस्तुत किए गए। दोनों वाचा अनुसमर्थन समारोहों में एक बड़ा अंतर यह है कि बाद के समारोह में ऐसे किसी कथन का अभाव है जिसमें इस्राएलियों ने व्यवस्था का पालन करने का संकल्प लिया हो। सम्भवतः इसे 34:32 में उनके द्वारा आज्ञाओं को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार करना समझा जाए।

उदारवादी विद्वान जो इस मत के प्रति प्रतिबद्ध हैं कि पेंटाटुक विभिन्न स्रोतों से निकला है वे विश्वास करते हैं कि अध्याय 24 और 34 एक ही घटना के दो ब्यौरे हैं। हालाँकि, यह तब और अधिक अच्छा अर्थ प्रदान करता है यदि समानताओं को

वास्तविक घटना के एक उद्देश्यपूर्ण और अर्थपूर्ण दोहराव के रूप में समझा जाए। समानताएं इसमें कोई संदेह नहीं छोड़ती कि, चाहे इस्राएल ने खुल्लम-खुल्ला वाचा का उल्लंघन किया हो, परमेश्वर ने वाचा को फिर से नया करने के द्वारा उन्हें क्षमा कर दिया था।

परमेश्वर की वाचा को फिर से नया करने की इच्छा (34:1-4)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "पहली तख़्तियों के समान पत्थर की दो और तख़्तियाँ गढ़ ले; तब जो वचन उन पहली तख़्तियों पर लिखे थे, जिन्हें तू ने तोड़ डाला, वे ही वचन मैं उन तख़्तियों पर भी लिखूँगा। [2]सबेरे तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे सामने खड़ा होना। [3]तेरे संग कोई न चढ़ पाए, वरन् पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे; और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत के आगे चरने पाएँ।" [4]तब मूसा ने पहली तख़्तियों के समान दो और तख़्तियाँ गढ़ीं; और भोर को उठकर अपने हाथ में पत्थर की वे दोनों तख़्तियाँ लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार सीनै पर्वत पर चढ़ गया।

वाचा का नवीनीकरण मूसा को पर्वत के ऊपर बुलाए जाने के द्वारा आरम्भ हुआ। पर्वत पर उसके ठहरने के दो उद्देश्य थे (1) परमेश्वर ने उसका तेज देखने की मूसा की विनती का उत्तर दिया था (33:18), जो परमेश्वर द्वारा इस्राएल से अपनी उपस्थिति हटा लेने की चेतावनी के द्वारा प्रेरित थी (33:3)। यह मूसा और इस्राएल का उसके सामने विशेष दर्जे का आश्वासन देने का एक साधन था (33:16)। (2) परमेश्वर ने उस वाचा की फिर से पुष्टि की जो इस्राएल के द्वारा उस समय तोड़ी गई थी जब उन्होंने सोने के बछड़े की आराधना की थी (32:1-10)।

आयत 1. जो **मूसा** को प्राप्त हुआ वह नियमों का एक नया समूह नहीं था। इसके बजाय, परमेश्वर वाचा को नया कर रहा था वह वाचा जो उसने कुछ समय पहले लोगों से की थी। **जो वचन पहली तख्तियों पर थे** वे उन दस आज्ञाओं का सन्दर्भ देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने कुछ समय पहले इस्राएल को दिया था (34:28; व्यव. 4:13; 5:22; 10:4)। यह तथ्य कि पहली तख्तियाँ मूसा के द्वारा **तोड़** डाली गईं थीं सांकेतिक रूप से इस बात का चित्रण करती थीं कि इस्राएलियों ने उस वाचा को तोड़ दिया था जो यहोवा ने उनसे की थी (32:19)।

आयतें 2, 3. मूसा को दिए गए परमेश्वर के निर्देशों में समय (**सबेरे**) और स्थान (**सीनै पर्वत** की **चोटी**) सम्मिलित था जहाँ वे मिलेंगे। परमेश्वर ने मूसा को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि लोग और पशु **पर्वत** से दूर रहें, जिस प्रकार उसने पहली बार व्यवस्था देते समय कहा था (19:12, 13)। जब मूसा वहाँ पर होगा, तो परमेश्वर पर्वत पर उपस्थित रहेगा, जिसने आगामी अनुभव को और भी शानदार बना दिया।

आयत 4. मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया, **और पत्थर की दो**

तख्तियाँ काटकर उस समय अपने साथ ले गया जब वह अगली **सुबह** पर्वत पर चढ़ा था।

परमेश्वर के नाम और स्वभाव का प्रचार किया गया (34:5-9)

[5]तब यहोवा ने बादल में उतरकर उसके संग वहाँ खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। [6]यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, "यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, [7]हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।" [8]तब मूसा ने तुरन्त पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् किया। [9]और उसने कहा, "हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चले; ये लोग हठीले तो हैं, तौभी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कर और हमें अपना निज भाग मान के ग्रहण कर।"

आयत 5. पर्वत के ऊपर, मूसा ने **यहोवा के नाम को पुकारा**; उसने प्रार्थना की और परमेश्वर की आराधना की। परमेश्वर ने **बादल में** नीचे आकर उत्तर दिया, जो उसकी उपस्थिति का चिन्ह था। इससे भी अधिक, परमेश्वर **उसके साथ वहाँ पर खड़ा था**।

आयत 6. आगे जो हुआ वह परमेश्वर की उस घोषणा के बाद कि वह इस्राएल के साथ नहीं जाएगा (33:3) एक चरम उत्कर्ष की अपेक्षित घटना थी। **यहोवा** मूसा **के सामने से होकर गुजरा**। परमेश्वर का यह प्रकाशन सबसे महत्वपूर्ण अवसर था जिसमें उसने मूसा पर स्वयं को प्रकट करना स्वीकार कर लिया था। इस समय से लेकर मूसा को ऐसे व्यक्ति के रूप में चिन्हित कर दिया गया था जिसने परमेश्वर को देखा था। इस अनुभव का प्रमाण 34:29-35 के अनुसार, उसके चेहरे पर देखा जा सकता था।

परमेश्वर केवल मूसा पर प्रकट ही नहीं हुआ, बल्कि उसने "अपने नाम और स्वभाव" का प्रचार भी किया (33:19)। उसने कहा कि उसका अपना नाम **यहोवा** ("याहवेह") है। यह नाम परमेश्वर को उसकी सभी ईश्वरीय विशिष्टताओं सहित प्रस्तुत करता है। आगे, दोहराव सहित, उसने इस बात की पुष्टि की और कहा कि वही **यहोवा परमेश्वर है**। इस्राएल के पास एक शक्तिशाली ईश्वर था, एकमात्र सच्चा परमेश्वर, जिसका नाम "याहवेह" है।

परमेश्वर ने पाँच गुणों की सूची बताते हुए अपने स्वभाव का वर्णन करना आरम्भ किया।[1] (1) वह **दयालु** या "दयावन्त" है (KJV), एक "करुणामय परमेश्वर" (NJB)। वह गहराई से अपने लोगों की देखभाल करता है जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों की देखभाल करता है। (2) वह **अनुग्रहकारी** है, और उन पर

अनुग्रह दिखता है जो इसके योग्य नहीं हैं। (3) वह **कोप करने में धीरजवन्त है,** जो है, "सहनशील" (KJV) और "संयमी" (CEV)। (4) वह **अति करुणामय** या "विश्वासयोग्य प्रेम" में **बना रहता है** (NJB)। (5) वह **सत्य** और "विश्वासयोग्यता" में भी बना रहता है (NIV)। परमेश्वर तब भी अपनी वाचा के प्रति सच्चा बना रहता है जब उसके लोग उसे निराश करते हैं यहाँ तक कि उसे त्याग देते हैं।

आयत 7. परमेश्वर **हजारों पीढ़ियों तक करुणा** भी करता है (देखें 20:6) और **अधर्म, अपराध और पाप** को क्षमा करता है। उसका हजारों पर करुणा दिखाने का आचरण उसके प्रेम के व्यापक क्षेत्र को व्यक्त करता है, विशेषतः वह दया जो उसने उन पर की थी जो उसके साथ वाचा में थे। इस समाचार ने कि परमेश्वर क्षमा करता है निश्चय ही मूसा और इस्राएल को बड़ा आराम दिया होगा, क्योंकि लोगों ने जघन्य पाप किया था और उन्हें अधिक क्षमा की आवश्यकता थी (32:30-32)। परमेश्वर की दया की गहराई पर आज्ञा उल्लंघन के लिए उपयोग किए गए तीन शब्दों के द्वारा बल दिया गया है: "अधर्म," "अपराध," और "पाप।"

एक ही समय, परमेश्वर न्यायी होने के साथ ही दयालु भी है: **परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है** (20:5 पर टिप्पणियाँ देखें)। उसका न्याय मांग करता है कि वह "दोषी" को दण्ड दे।

आयत 8. मूसा पर परमेश्वर के प्रकाशन के बाद, मूसा भूमि की और झुका और यहोवा की **आराधना** की। एक सच्चे और जीवित परमेश्वर से भेंट होने के बाद एक उचित प्रतिक्रिया है (1) नम्रता, जो उसकी तुलना में किसी के पापी और अयोग्य होने के भाव के द्वारा आती है, और (2) आराधना, और स्तुति के साथ उसकी महान शक्ति और भलाई को स्वीकार करना।

आयत 9. मूसा ने फिर से परमेश्वर की उपस्थिति और **क्षमा** की प्रार्थना की। उसने विनती की और कहा कि वह कनान की यात्रा करते समय **यहोवा** (אֲדֹנָי, *एदोनाई)* इस्राएल के **लोगों** के **मध्य** रहे, ऐसी बात जिसके विषय में परमेश्वर ने पहले कहा था कि उसकी मंशा ऐसा करने की नहीं थी (33:3)। मूसा ने इस्राएल के पापी होने का इनकार नहीं किया या बहाना नहीं बनाया, बल्कि इसके बजाय उसने स्वीकार किया के वे **हठीले** या "कठोर" थे (32:9 पर टिप्पणियाँ देखें)। इसके बाद मूसा ने परमेश्वर की क्षमा की दुहाई दी, और विनती की और कहा कि वह उनके साथ अपनी वाचा को फिर से नया करे और उन्हें फिर **अपना निज भाग** मान के ग्रहण करे (देखें 19:5)।

वाचा का नया किया जाना (34:10)

10उसने कहा, "सुन, मैं एक वाचा बाँधता हूँ। तेरे सब लोगों के सामने मैं ऐसे आश्चर्यकर्म करूँगा जैसा पृथ्वी पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए; और वे सारे लोग जिनके बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेंगे; क्योंकि जो मैं तुम लोगों के लिए करने पर हूँ वह भयंकर काम है।"

आयत 10. परमेश्वर ने यह कहते हुए मूसा की विनती स्वीकार कर ली कि, वह एक **वाचा बांधेगा**। यहाँ पर स्थापित वाचा को उस वाचा के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ पहले बाँधी थी (19:5, 6; देखें व्यव. 9; 10)। आर. एलन कोल ने टिप्पणी की, "यह 'नवीनीकरण' का पहलू यदि शब्दों का नहीं तो, इस विचार के अधिक दोहराए जाने का विवरण दे सकता है (अर्थात 5-7 आयतों में परमेश्वर के प्रकाशन में, और 12-25 आयतों में, वाचा की शर्तों में)।"[2]

परमेश्वर ने समझाया कि उसके विशेष **लोग** होने का क्या तात्पर्य था: क्योंकि इस्राएली उसकी सम्पत्ति थे, वह उनके लिए शानदार **आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो सारे संसार और जातियों में कभी नहीं हुए**। जब परमेश्वर ने इन "आश्चर्यकर्मों" और "अद्‌भुत कार्यों" (NIV) के विषय में बात की तो निश्चित तौर पर परमेश्वर का क्या तात्पर्य था यह अस्पष्ट है। इस्राएल जंगल में पहले ही आश्चर्यकर्म देख चुका था, परन्तु अभी और भी आने वाले थे। शायद परमेश्वर कनान पर विजय से सम्बन्धित आश्चर्यकर्मों की भविष्यद्वाणी कर रहा था। जातियों ने कभी भी ऐसा कुछ नहीं देखा था जैसे कि इस्राएल का सूखी भूमि पर यरदन नदी को पार करना अथवा परमेश्वर का यरीहो की दीवार को ढाना (यहोशू 3; 6)। इस्राएल की खातिर उसके कार्य एक **डरावनी बात** होंगे, जो कि, "एक भयानक बात" है (NRSV)। जातियाँ परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया विनाश थोक में अनुभव करने वाली थीं - कभी कभी चमत्कारी ढंग से।[3]

व्यवस्था का पुनः जारी किया जाना (34:11-26)

किसी भी राष्ट्र के साथ वाचा के विरुद्ध परमेश्वर की चेतावनी (34:11-17)

**11"जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूँ उसे तुम लोग मानना। देखो, मैं तुम्हारे आगे
से एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों को निकालता हूँ।
12इसलिये सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उसके निवासियों से
वाचा न बाँधना; कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे लिये फंदा ठहरे। 13वरन् उनकी
वेदियों को गिरा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, और उनकी अशेरा नामक
मूर्तियों को काट डालना; 14क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने
की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला
परमेश्वर है, 15ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बाँधे, और वे अपने
देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें, और उनके लिये बलिदान भी करें, और
कोई तुझे नेवता दे और तू भी उसके बलिपशु का मांस खाए, 16और तू उनकी
बेटियों को अपने बेटों के लिये लाए, और उनकी बेटियाँ जो आप अपने देवताओं के
पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने का
व्यभिचार करवाएँ। 17तुम देवताओं की मूर्तियाँ ढालकर न बना लेना।"**

आयतें 11, 12. जबकि परमेश्वर ने इस्राएल को विश्वास दिलाया कि वह वाचा का अपना भाग पूरा करेगा, उसने उन्हें यह भी बताया कि उनके दायित्वों को कैसे पूरा किया जाए। जो वाचा वे परमेश्वर के साथ नए सिरे से बाँध रहे थे वह विशेष था। उन्हें उस **देश** के लोगों के साथ वाचा सम्बन्ध में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी जिस पर वे होकर जाते थे, चाहे वह **एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी,** या **यबूसी** हो (देखें 3:8, 17; 13:5; 23:23; 33:2)। क्यों? क्योंकि परमेश्वर की इच्छा उन लोगों का "सत्यानाश करने" (23:23) की थी और वह प्रतिज्ञा की भूमि से उन्हें **निकालना** चाहता था। इसके अलावा, इस तरह की वाचा परमेश्वर के लोगों के लिये **एक फंदा ठहरे**गी, कि वे पाप और विनाश की ओर चले जाएं (देखें टिप्पणी 10:7; 23:33 पर)।

आयत 13. यह सुनिश्चित करने के लिये कि इस्राएलियों ने कनानी देशों के साथ कोई वाचा नहीं बाँधी थी, उनको **उनकी वेदियों को गिरा देना** था जो देवताओं के लिये बलिदान करने के काम आता था। इसके अलावा, **उनकी लाठों को तोड़ डालना, और उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को काट डालना** था (देखें टिप्पणी 23:24 पर)। "अशेरीम" "अशेरा" का बहुवचन है, सम्भवतः "एक नक्काशीदार खम्भा उस देवी [उसके नाम से] के या उसके पवित्र वृक्ष के समान"; ऐसी वस्तु स्पष्ट उप से लकड़ी से बना होता था (न्यायियों 6:25-26; 1 राजा 15:13) और एक वेदी के पास खड़ा किया जाता था।"[4]

आयत 14. इसकी आवश्यकता दस आज्ञाओं के पहले दो पर आधारित थी: **तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना** (देखें 20:3) और "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना" (34:17; देखें 20:4)। परमेश्वर ने स्वयं को **जलन रखने वाला** वर्णित किया कि वह किसी मनुष्य को या किसी वस्तु को इस्राएल के जीवन में अपने प्रतिद्वंद्वी होने की अनुमति नहीं देगा। लोगों को दण्ड दिया जाएगा यदि वे अन्य देवताओं की उपासना करते हैं (देखें टिप्पणी 20:5 पर)।

आयतें 15, 16. उस देश के निवासियों से **वाचा** बाँधना इस्राएल को उनके **देवताओं के लिये बलिदान** करना उनके मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले **... बलिपशु का मांस खाने** को प्रेरित कर सकता था। इन देशों के बेटियों के साथ विवाह कर इस्राएल को **उनके देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार** का कारण हो सकता था। यह अभिव्यक्ति मुख्य रूप से, आत्मिक व्यभिचार के लिये प्रभु, इस्राएल का सच्चा "पति," का त्याग करने और अपने "यारों" के या झूठे देवताओं के पीछे जाने (यहेज. 16; होशे 2) को संदर्भित करता है। इसलिये, यौन गतिविधियाँ अक्सर प्रसिद्ध मूर्तिपूजक लोगों के धार्मिक समारोहों का हिस्सा हुआ करते थे।

इस्राएल को इस चेतावनी की आवश्यकता होना देश के आनेवाले इतिहास से स्पष्ट है। इस्राएल ने अक्सर व्यवस्था की शिक्षा और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा चेतावनी के बावजूद, अन्य लोगों के साथ संधि स्थापित करता था, जिसका परिणाम अत्यन्त विनाशकारी होता था। गिनती 25:1-3 में इसके विरुद्ध परमेश्वर की चेतावनी का एक उदाहरण पाया जाता है। बाद में, यह लेख इंगित करता है कि उस अवसर पर इस्राएल के पाप में यौन अनैतिकता के शामिल होने के बारे में बताया गया था

(गिनती 25:6-8)।

आयत 17. अनुच्छेद इस आदेश के साथ समाप्त होता है: **"तुम देवताओं की मूर्तियाँ ढालकर न बना लेना।"** आयत 14 से 17 तक एक श्लोक (ABBA) प्रक्रम को दर्शाता है:

A1: "तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं" (34:14)।

B1: "ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बाँधे, और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें, और उनके लिये बलिदान भी करें, और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उसके बलिपशु का मांस खाए" (34:15)।

B2: "तू उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिये लाए, और उनकी बेटियाँ जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करवाएँ" (34:16)।

A2: "तुम देवताओं की मूर्तियाँ ढालकर न बना लेना" (34:17)।

आयत 17 आयत 14 के समानान्तर पाया जाता है; एक साथ लिया गया है, इन आयतों में मूर्तियों के बनाने और उनको दण्डवत् करने को मना किया गया है। आयत 17 दूसरी आज्ञा (20:4) से थोड़ा अलग अर्थ प्रदान करता है। यह "मूर्ति खोदकर" के बदले "मूर्तियाँ ढालकर" को प्रतिबंधित करता है। इस प्रकार, यह आज्ञा विशेष रूप से पाप के विरुद्ध बोलता है, जिसने आवश्यक वाचा के नवीनीकरण को आवश्यक बताया - अर्थात् "बछड़ा ढालकर" उसकी उपासना की (32:4; देखें 20:23)।

आराधना में इस्राएल की जिम्मेदारियों पर परमेश्वर का विवरण (34:18-26)

18"अख़मीरी रोटी का पर्व मानना। उसमें मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अख़मीरी रोटी खाया करना; क्योंकि तू मिस्र से आबीब महीने में निकल आया। 19हर एक पहिलौठा मेरा है; और क्या बछड़ा, क्या मेम्ना, तेरे पशुओं में से जो नर पहिलौठे हों वे सब मेरे ही हैं। 20गदही के पहिलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको छुड़ाना, यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ देना। परन्तु अपने सब पहिलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुँह न दिखाए। 21छ: दिन तो परिश्रम करना, परन्तु सातवें दिन विश्राम करना; वरन् हल जोतने और लवने के समय में भी विश्राम करना। 22और तू सप्ताहों का पर्व मानना जो पहले लवे हुए गेहूँ का पर्व कहलाता है, और वर्ष के अन्त में बटोरन का भी पर्व मानना। 23वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपना मुँह दिखाएँ। 24क्योंकि मैं अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरी सीमाओं को बढ़ाऊँगा; और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुँह दिखाने के लिये वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का

लालच न करेगा। [25]मेरे बलिदान के लहू को ख़मीर सहित न चढ़ाना, और न फसह के पर्व के बलिदान में से कुछ सबेरे तक रहने देना [26]अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना।"

प्रस्तुत लेख, इस्राएल के लोगों और कनान के देवताओं (34:11-17) के बारे में इस्राएल के दायित्व से परमेश्वर की आराधना से सम्बन्धित सामान्य विधियों (34:18-26) की ओर आगे बढ़ता है। लेख का यह भाग व्यवस्था को दोहराता है जो (1) परमेश्वर के नियमों की सूची में (23:12-19) और निर्गमन के समय जेठों या पहिलौठों (13:12, 13) के बारे विवरण में दिया गया था। इन विधियों पर पर्वों और विशेष दिनों को मानने के लिये इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी, और इस्राएलियों को परमेश्वर को देने की जो आवश्यकता होती थी उसपर जोर दिया गया था।

इन नियमों को यहाँ क्यों शामिल किया गया है? इस प्रश्न का सबसे अधिक सम्भावित उत्तर यह है कि आराधना और बलिदान से सम्बन्धित नियम विशेष रूप से उपयुक्त थे क्योंकि इस्राएल ने परमेश्वर को भूलकर सोने की मूर्ति को अधिक महत्व दिया। इस्राएल की समस्या झूठे मूर्तियों की उपासना करना था। इन नियमों ने सच्ची आराधना की एक तस्वीर प्रस्तुत की, जो परमेश्वर के लिये होनी चाहिए। यहाँ दिए गए निर्देशों के बाद, ये इस्राएल को उनकी गलती को दोहराने से रोकेगा, जब उन्होंने "बछड़ा ढालकर" उसे दण्डवत् किया।

आयत 18. पहला नियम इस्राएलियों को **अख़मीरी रोटी का पर्व मानने** की आवश्यकता थी, इस पर्व का मनाया जाना फसह (देखें 13:3-10; 23:15) से सम्बन्धित था। इसे मानने के लिये इस्राएल के जल्दबाजी में मिस्र से बाहर निकलने के कारण इसमें भाग लेनेवालों को अखमीरी रोटी खाना पड़ा था, जब आटा खमीर के बिना था क्योंकि उनके पास "स्वयं के लिये भोजन तैयार करने का समय ही नहीं था" (12:39)। इस पर्व की तिथि मिस्र के दासत्व से इस्राएल के छुटकारे की पहली वर्षगाँठ के साथ सम्बन्धित किया गया था।

आयतें 19, 20. अखमीरी रोटी के पर्व के सम्बन्ध में, लोगों को अपने परिवार के और उनके जानवरों के जेठे [पहिलौठे] को यहोवा को देने का आदेश दिया गया (देखें 13:1, 2, 11-15)। क्योंकि **एक गधा** को अशुद्ध समझा जाता था और बलिदान के रूप में चढ़ाया नहीं जा सकता था, इसके **बदले मेम्ना देकर उसको** छुड़ाया जा सकता था, या फिर उसे मार दिया जा सकता था (देखें 13:13)। गधे के स्वामी को परमेश्वर के लिये दिए गए घरेलू पशुओं के पहिलौठे से लाभ कमाने की अनुमति नहीं थी। पहिलौठे **बेटों** को भी **छुड़ाया** जाना था; परमेश्वर के लिये पहले पहिलौठे बेटों को बलिदान देने के लिये एक विकल्प के रूप में परमेश्वर को धन दिया जाना था। पहली दृष्टि में, आज्ञा **"मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुँह न दिखाए"** यह इंगित करता है कि अखमीरी रोटी का पर्व वर्ष का वह समय था जब पहिलौठे बेटों को परमेश्वर को अर्पित किया गया था। एक अन्य सम्भव व्याख्या

यह है कि अभिव्यक्ति इस्राएल को जौ की फसल के पहले फल को चढ़ाए जाने के लिये संदर्भित करती है (देखें 23:15 पर टिप्पणी, देखें व्यव. 16:16, 17)।

आयत 21. इसके बाद, परमेश्वर ने सब्त आज्ञा को दोहराया, जिसमें कहा गया कि इस्राएलियों को **सातवें दिन विश्राम करना** था (देखें 23:12)। एक किसान के लिये अपने काम को फसल के **लवने के समय** में स्थगित करना एक बड़े विश्वास को दिखाना होगा। कोल ने टिप्पणी की कि "विश्रामदिन का पालन करने के लिये परमेश्वर के प्रबन्धन में विश्वास की एक परीक्षा थी (निर्गमन 16:29)।"[5]

आयत 22. तब परमेश्वर ने इस्राएल के धार्मिक तिथि-पत्र के दूसरे दो प्रमुख पर्वों को मानने की आज्ञा को दोहराया - यह **सप्ताहों का पर्व** या "पेन्तेकुस्त" और **बटोरन का भी पर्व** या "तम्बू" का पर्व (देखें 23:16) को भी मानना। प्रत्येक पर्व को मानने का समय दिया गया है। मिस्र से इस्राएल का छुटकारा होने के बाद अखमीरी रोटी का पर्व "अबीब के महीने में" मनाया गया (34:18)। सप्ताहों का पर्व **गेहूँ की फसल** के समय मनाया गया। "सप्ताहों का पर्व" नाम से पता चलता है कि यह अखमीरी रोटी के पर्व के उनचास दिन (सप्ताहों का सप्ताह, 7 x 7) बाद मनाया गया। यह फसल के समय की औसतन अवधि है। बटोरन का पर्व **वर्ष के अन्त में** अर्थात् कृषि तिथि-पत्र के अन्त में मनाया जाता था। यदि इस्राएल के पास कोई दूसरा तिथि-पत्र नहीं था, तो ये कुछ शब्द पर्वों को उचित समय पर मानने की अनुमति के लिये पर्याप्त होगा।

आयतें 23, 24. इस्राएल के **सब पुरुष** को फिर से **तीन** पर्व में **परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपना मुँह दिखा**ने की आज्ञा दी गई थी (देखें 23:17)। वह जगह जहाँ लोग इन अवसरों पर उसके पास आते थे, यहाँ पर विशेष रूप से नहीं बताया गया है। बाद में, परमेश्वर ने कहा कि बलिदान चढ़ाने के लिये वह एक जगह का चयन करेगा (व्यव. 12:5-14)। राजाओं के शासन काल से पहले, बलिदान तब चढ़ाया जाता था, जहाँ पर तम्बू और वाचा का सन्दूक स्थित होते थे। अन्ततः, स्थान जिसे परमेश्वर ने चुना वह यरूशलेम था जहाँ सुलैमान ने परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में एक अधिक स्थायी मन्दिर का निर्माण किया था।

जब इस्राएल किसी पर्व पर एक साथ परमेश्वर की आराधना करने के लिये जाते थे, तो उन्हें अपनी भूमि की चिन्ता नहीं होती थी कि वह उस भूमि के पूर्व निवासियों के द्वारा ले लिया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर **अन्यजातियों को निकालकर** [इस्राएल की] **सीमाओं को बढ़ाएगा**। उसने कहा था कि जब वे **परमेश्वर यहोवा को अपना मुँह दिखाने** के लिये ऊपर जाते थे तब **कोई** उनकी **भूमि का लालच न** करेगा। पिछले निवासियों के बदले, एक सुझाव की थोड़ी सी सम्भावना यह है कि "कोई नहीं" इस्राएली पड़ोसियों को संदर्भित करता है जो कम आत्मिक थे और वे पर्व में शामिल नहीं हुए थे। ये सीमा के पत्थर की ओर आगे बढ़ने के लिये आत्मिक पड़ोसी की (व्यव. 19:14) जो परमेश्वर की आराधना करने के लिये गए थे परीक्षा में डाल सकते थे।[6]

आयत 25. बलिदान और भेंट के सम्बन्ध में अन्य व्यक्तिगत विधियाँ दिए गए थे (1) एक पशु **बलिदान** के साथ **ख़मीर सहित रोटी** नहीं **चढ़ाना** था। (2) पर्व में

फसह की रात को मेम्ने को पूरी तरह से खाया जाना था। कोई भी भाग जो खाया नहीं गया था उसे जला देना था और **न कुछ सबेरे तक रहने देना** था (देखें टिप्पणी 23:18 पर)।

आयत 26. न केवल जानवरों और लोगों की, बल्कि फसलों का **पहला भाग** भी - परमेश्वर को भेंट किया जाना था; उन्हें **यहोवा के भवन में** ले आना था। यह विधियाँ तम्बू के और बाद में मन्दिर के पूरा होने की अपेक्षा से किया जाता था (देखें 23:19)।

सूची में अन्तिम आवश्यकता, **"बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना,"** आराधना या बलिदान करने से किसी तरह से सम्बन्धित होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है, यह इस्राएल को मूर्तिपूजक रीतियों में शामिल होने से रोकना चाहता था (देखें टिप्पणी 23:19 पर)। यह नियम अध्याय 34 में दोबारा आराधना पर दिए नियमों के नमूने के साथ समाप्त होता है।

34:18-26 में दर्ज किए गए नियम केवल उन नियमों का नमूना है जो मूसा को उसके दूसरी बार पर्वत पर चालीस दिन रहने के दौरान दिए गए थे। ये मूसा और उन लोगों के लिये विशेष करके रुचिकर थे जिन्होंने पुस्तक को पहले पढ़ा (या उन्हें पढ़कर सुनाया गया) क्योंकि वे उस तरह की गतिविधि से सम्बन्धित हैं, जिसमें इस्राएली पापमय जीवन बिता रहे थे। इन व्यवस्थाओं के माध्यम से, परमेश्वर इस बात पर जोर दे रहे थे कि उसके लिये उसके लोगों की किस प्रकार की आराधना ग्रहण योग्य होनी थी।

स्वतन्त्र विचारवाले विद्वान इस अध्याय (34:10-26; 34:14-26; या 34:17-26) में पाई गई व्यवस्था पर अधिक ध्यान देते हैं, यह एक "वैधानिक व्यवस्था" है जो "नैतिक व्यवस्था" के विपरीत होती है जो 20:1-17 में पाया गया है।[7] यह विचार सामान्य रूप से इस विचार के साथ होता है कि अध्याय 34 की वाचा-निर्माण कथा एक एकान्तर विवरण है जो अध्याय 20 से 24 में पाया जाता है।

जबकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि अध्याय 34 में दी गई व्यवस्था मुख्यतः विधियों के साथ पाई जाती हैं, वे नियमों का एक समूह नहीं होते हैं, जिन्हें दस आज्ञाओं के विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में, केवल अनुचित तरीके "वैधानिक व्यवस्था" हो सकती है जो इस लेख में पाई जाती है जो किसी भी एकत्रित व्यवस्था - दस आज्ञाओं के एक समूह में दृढ़ की जा सकती है। परिणाम स्वरूप, सीनै पर्वत पर परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों के सम्पूर्ण बातों के प्रतिनिधि के रूप में इस अध्याय में नियमों की व्याख्या करना सबसे अच्छा है। इस्राएल से उनकी स्थिति की प्रासंगिकता के कारण इन विशेष नियमों को पुस्तक में इस बिंदु पर दर्ज किए गए हैं।

दूसरी बार दस आज्ञाओं का दिया जाना (34:27, 28)

27तब यहोवा ने मूसा से कहा, "ये वचन लिख ले; क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं ने तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बाँधी है।" 28मूसा वहाँ यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उसने रोटी खाई और न पानी पिया। और उसने उन तख़्तियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएँ लिख दीं।

आयत 27. व्यवस्था **यहोवा** ने दी थी; यह वह थी जिसने मौखिक रूप से इसे घोषित किया (34:10)। इसके अलावा, भविष्य में **इस्राएल** को सिखाने और मार्गदर्शन करने के लिये परमेश्वर ने **मूसा को** (इसे) लिखने के निर्देश दिए। यह **इन्हीं वचनों** के अनुसार था कि उसने अपने लोगों के साथ नई **वाचा** बाँधी थी।

आयत 28. मूसा **चालीस दिन और चालीस रात** परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त करने और इसे लिखने के लिये पर्वत पर रहा (देखें व्यव. 10:10)। उन दिनों उसने उपवास किया; **और तब तक न तो उसने रोटी खाई और न पानी पिया।**[8] मूसा परमेश्वर के साथ इस्राएल के मध्यस्थ के रूप में उनके पश्चाताप को दर्शा रहे थे। व्यवस्थाविवरण 9:18 विवरण देता है,

> "तब तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की और उसे रिस दिलाई थी, मैं यहोवा के सामने मुँह के बल गिर पड़ा और पहले के समान [व्यव. 9:9], अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक न तो रोटी खाई और न पानी पिया।"

आयत 28 के पिछले भाग के बारे में बहुत वाद विवाद होता रहा है: **और उसने उन तख़्तियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएँ लिख दीं।** "उसने" का वास्तविक पूर्वपद मूसा था, जो पिछली बातों का विषय है। एक अंग्रेजी अनुवाद सर्वनाम को बड़े अक्षरों में न करके इस स्थिति का समर्थन करता है। जबकि, अध्याय के शुरुआत में, परमेश्वर ने कहा था कि "जो वचन उन पहली तख़्तियों पर लिखे थे, वे ही वचन वह उन तख़्तियों पर भी लिखेगा" (34:1)। कोल ने वर्णनकर्ता के लिये तर्क दिया, "दो प्रकार के वर्णन का अर्थ एक ही बात से थी; वे घटनाओं के समान प्रतिक्रिया के वर्णन करने के वैकल्पिक तरीके थे।"[9] पुराना नियम धर्मविज्ञान के अनुसार, जो कुछ भी हुआ, परमेश्वर इस घटना का जिम्मेदार था।

जॉन आई. डरहम द्वारा सुझाई गई एक और सम्भावना यह है कि लेख के इस भाग के अन्तिम वाक्य में परमेश्वर इसका कर्ता है।[10] इस मामले में, परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को दो तख़्तियों पर लिखी थी (जैसा कि उसने 34:1 में कहा था), और मूसा ने बाकी नियमों और विधियों को दूसरे वर्णन के साथ लिखा था (जैसा कि उसने 24:4 में लिखा था)। यह व्याख्या व्यवस्थाविवरण 10:4 में दिए गए लेख के समान बातों को बताता है, जहाँ मूसा परमेश्वर के बारे में कहता है: "जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर अग्नि के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही उसने पहलों के समान उन पटियाओं पर लिखे, और उनको मुझे सौंप दिया।"

यहोवा का वैभव प्रदर्शित किया गया (34:29-35)

29जब मूसा साक्षी की दोनों तख़्तियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतर रहा था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकल रही थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से किरणें निकल रही हैं। 30जब हारून और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें निकल रही हैं, तब वे उसके पास जाने से डर गए। 31तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत उसके पास आया, और मूसा उनसे बातें करने लगा। 32इसके बाद सब इस्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएँ यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके साथ बात करने के समय दी थीं, वे सब उसने उन्हें बताईं। 33जब तक मूसा उनसे बात न कर चुका तब तक अपने मुँह पर ओढ़ना डाले रहा; 34परन्तु जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उसके सामने जाता, तब तब वह उस ओढ़नी को निकलते समय तक उतारे हुए रहता था; फिर बाहर आकर जो जो आज्ञा उसे मिलती उन्हें इस्राएलियों से कह देता था। 35इस्राएली मूसा का चेहरा देखते थे कि उससे किरणें निकलती हैं; और जब तक वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता था।

आयत 29. जब मूसा दोनों तख़्तियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतर आया, तो वह नहीं जानता था कि परमेश्वर से उसकी भेंट होने के कारण **उसके चेहरे से** किरणें निकलने लगी थीं।[11] मूसा के चेहरे से जो किरणें निकल रही थीं, उसे परमेश्वर की तेजोमय महिमा के रूप में देखा जाना चाहिए, जो उपस्थिति में होने का आभास दिलाता है (2 कुरि. 3:7)।

आयत 30. इस्राएल ने भय के साथ **मूसा** की दृष्टि अनुसार प्रतिक्रिया व्यक्त की। जिस प्रकार लोग डरते थे जब परमेश्वर पर्वत पर से बातें करता था (20:18, 19), वे तब भी **डर गए** थे जब परमेश्वर का प्रतिनिधि उनके पास आया। परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति खतरनाक है; जो लोग बिना बुलाए परमेश्वर के या परमेश्वर की वस्तुओं के निकट गए वे मर गए। इस उदाहरण में लोग सुरक्षित थे। मूसा के बदलते स्वरूप ने आश्वासन दिया गया कि वह परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर ने **उसके** द्वारा बात की, परन्तु इससे राष्ट्र को कोई खतरा नहीं बताया गया।

आयतें 31, 32. इसलिये, **मूसा ने उनको बुलाया; और हारून मण्डली के ... उसके पास आया। मूसा उनसे बातें करने लगा।** स्पष्ट है, मूसा ने उनके डर को शान्त करने के अलावा कुछ नहीं किया। शायद उसने अपने अनुभवों के बारे में बताया है और व्यवस्था को पढ़ने के लिये एक समय निर्धारित किया।

बाद में, **सब इस्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएँ यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके साथ बात करने के समय दी थीं, वे सब उसने उन्हें बताईं।** इस अवसर पर, मूसा ने उसे लोगों के सामने पढ़ा या कह सुनाया होगा, जिसे व्यवस्था जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिया था, जिस प्रकार उसने वाचा के पुष्टीकरण समारोह (24:3, 7) में किया था। जबकि पुस्तक यह नहीं बताता है कि लोगों ने

व्यवस्था का पालन करने के लिये, स्वयं फिर से शपथ खाई, सम्भवतः उन्होंने पहले की घटना की मिसाल दी थी।

आयत 33. अध्याय के अन्तिम वचन मूसा के लिये परमेश्वर के नियमित प्रकाशन से सम्बन्धित हैं। वे संकेत देते हैं कि मूसा के **चेहरे** से निकलती किरणें कुछ समय के लिये नहीं परन्तु निरन्तर चमकते रहनेवाली थी। उसका चेहरा, वास्तव में, इतना चमकता था कि दैनिक कार्यों को करने के दौरान ध्यान भंग करनेवाला था; फलस्वरूप, जब वह परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में कार्य नहीं कर रहा होता था, उसका मुँह पर **ओढ़ना** से ढके रहता था।

आयतें 34, 35. जब जब **मूसा** को परमेश्वर का संदेश मिलता, **वह उस ओढ़नी को उतारे हुए रहता था।** उस समय, सम्भवतः ये प्रकाशन मिलापवाले तम्बू में हुआ करते थे (33:7-11) जब मूसा बाहर आकर लोगों को परमेश्वर का वचन कह सुनाता था, तो वे **मूसा का चेहरा देखते थे कि उससे किरणें निकलती हैं।** जिससे वे यह जान जाते थे कि उसका वचन परमेश्वर की ओर से थे।[12] बाकी के समय में, मूसा के लिये उस **ओढ़नी** को डाले रहना आवश्यक होता था।

अनुप्रयोग

नए किए जाने के बाद, फिर क्या? (अध्याय 34)

जादूगर शमौन के समान हर एक मसीही को कभी-कभी फेर लाने की आवश्यकता होती है (प्रेरितों 8:18-24; गला. 6:1; याकूब 5:20)। एशिया की सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्र का सुझाव देते हैं कि कभी-कभी पूरी कलीसिया को फेर लाना चाहिए (प्रका. 2:5)। फेर लाने में कौन सी बात पाई जाती है? स्पष्ट है, जो पाप में गिर चुके हैं, उन्हें अपने पापी स्वभाव को पहचान लेना और उनसे प्रायश्चित करना चाहिए (प्रेरितों. 8:22; प्रका. 2:5), तब परमेश्वर उन्हें क्षमा करता है। फिर क्या? कैसे फेर लाया हुआ व्यक्ति फिर से गिरने से बच सकता है? उत्तर है उनके नए हो जाने से।

निर्गमन इस सिद्धान्त की व्याख्या करता है। अध्याय 32 और 33 में, इस्राएलियों ने पाप किया और उनके पाप क्षमा किए गए। इससे पहले कि वे प्रतिज्ञा के देश के लिये अपनी यात्रा जारी रख सकें, उन्हें नए होने, पुनः समर्पित और पुनर्जागृति की आवश्यकता होती है! ठीक यही बात है जो मसीहियों को फेर लाने के लिये करने चाहिए।

परमेश्वर के दर्शन लिये हमारा नया होना। इस्राएल पहले से ही परमेश्वर को जानता था; वे लोग उसकी उपस्थिति का अनुभव कर चुके थे अब उन्हें उसके बारे में अपनी समझ और उस पर अपने विश्वास को नया करने की आवश्यकता थी। उस आवश्यकता को पूरा करने के लिये, परमेश्वर ने मूसा को अपने आपको देखने की अनुमति दी (34:1-9; देखें 33:18-23)। उससे भी अधिक महत्वपूर्ण, परमेश्वर ने स्वयं का वर्णन मूसा और इस्राएल से किया। निर्गमन 34:6, 7 उसे प्रेम का परमेश्वर के रूप में वर्णन करता है: "ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में

धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला है।" एक प्रेमी परमेश्वर के रूप में वह "अधर्म और अपराध और पाप की क्षमा करनेवाला है।" वह पाप का दण्ड देनेवाला परमेश्वर भी है: "दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।" परमेश्वर केवल प्रेम करनेवाला परमेश्वर नहीं है, परन्तु वह क्रोध करनेवाला परमेश्वर भी है। वह प्रायश्चित्त न करनेवाले पापी मनुष्य को दण्ड देता है (देखें रोमियों 11:22)। अपने इतिहास के इस बिन्दु पर, इस्राएल को परमेश्वर इन गुणों के बारे में सीखना था।

हमें नया बनने के लिये, परमेश्वर को हमें वैसा ही देखना चाहिए जैसा वह है: करुणा और क्षमा करनेवाला, परन्तु कठोर और क्रोध करनेवाला भी है। वह हमारे साथ कैसा व्यवहार करेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम पश्चाताप करने के लिये इच्छा रखते हैं या नहीं। एक बार नया बनने के बाद, हमें स्मरण रखना चाहिए कि प्रेमी परमेश्वर जिसने स्वेच्छा से हमारे पाप को क्षमा किया वह हमें निर्दोष न ठहराएगा यदि हम संसार में वापस चले जाते हैं।

परमेश्वर के साथ हमारी वाचा का नवीकरण। निर्गमन के समय में इस्राएल के वास्तविक अनुभव में उनके लिये परमेश्वर को जानने में - मूसा के द्वारा, विपत्तियों, समुद्र के मार्ग छुटकारा, उनकी जंगल की यात्रा, और सीनै पर उनके अनुभव शामिल थे। तब उन्होंने परमेश्वर के साथ एक वाचा बाँधी, उसकी आज्ञा मानने की शपथ खाई (अध्याय 19)। उनके घृणित पाप करने के बाद (अध्याय 32), उन्होंने वाचा को नया किया।

निर्गमन 34 में जिसकी चर्चा बहुत बार की गई है वह इस्राएल के पूर्व अनुभवों की याद दिलाता है। परमेश्वर ने पहले ही अपने आपको मूसा पर प्रकट किया, और व्यवस्था दो नई तख्तियों पर लिखी गई। जब मूसा ने परमेश्वर से अपने लोगों को "निज भाग" (34:9) मान के ग्रहण करने के लिये कहा तो उसने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जिनका प्रयोग परमेश्वर ने 19:5 में किया था। दस आज्ञाओं का उल्लेख आयत 28 में किया गया है। फिर, मूसा ने लोगों को व्यवस्था सौंपे (34:31, 32; देखें निर्गमन 24)। स्पष्ट है कि, परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपनी वाचा को पुनः नया किया था (34:9, 10)।

जब हम मसीही के रूप में नया होना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर के साथ हमारी वाचा को नया करना चाहिए। एक मसीही का दूसरे मसीही के साथ एक प्रारंभिक समझौता, इस्राएल के समान ही है। मसीही होते हुए, हमने कहा, "प्रभु ने जो कुछ कहा है हम वैसा ही करेंगे।" जब हम पाप में गिर जाते हैं, तो हम उस वाचा को तोड़ देते हैं। वापस आने के लिये, हमें वाचा को नया करना चाहिए और नए सिरे से दृढ़ संकल्प के साथ *सब कुछ* जो परमेश्वर चाहता है परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये स्वयं को समर्पित करना चाहिए!

परमेश्वर की आवश्यकताओं की हमारी समझ का नया होना। निर्गमन 34 बताता है कि परमेश्वर ने उन नियमों को दोहराया जो उसने पहले दिया था। इस्राएल को फिर से उस प्रतिज्ञा को सुनने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर उन्हें

कनान देश में ले जाएगा (34:10, 11)। उन्हें स्मरण कराया जाना चाहिए कि परमेश्वर ने उनसे पूर्ण भक्ति की मांग की थी। यह भक्ति किसी भी अन्य देवताओं (34:12-17) की उपासना करने के इनकार करने, आराधना के नियमित समय (34:18, 21-25) में (34:19, 20, 26) और दूसरों से उचित व्यवहार करने में और दस आज्ञाओं (34:28) की शिक्षा के अनुसार प्रकट किया जाना था।

परमेश्वर की आवश्यकताओं पर हमें भी एक नएपन से विचार करना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हमारी वचनबद्धता यह है कि हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये परमेश्वर और मनुष्य दोनों प्रेम से करते हुए पूरी रीति से अपने आप को समर्पित करें। नए बनने के लिये हमारी समझ का नया होने और परमेश्वर के नियमों का पालन करने के लिये हमारे संकल्प दृढ़ होने की आवश्यकता है। जब तक हमारा जीवन इस दृढ़ संकल्प को प्रगट नहीं करता, तब तक हमारा नया बनना व्यर्थ है।

उपसंहार। इस्राएल के भयानक पाप के बाद, उनकी एक नई शुरुआत थी। इस वाचा के नए किए जाने से और दयालु परमेश्वर के उनके पापों को क्षमा किए जाने के साथ, इस्राएल ने तम्बू का निर्माण किया, महान उदारता और सावधानीपूर्वक आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया। उनका अनुभव हमें प्रोत्साहित करता है कि हम पाप से फिरें और नए बनते जाएँ, ताकि हम अपने आपको परमेश्वर के आगे फिर से समर्पित कर सकें।

परमेश्वर दयालु और क्रोध करनेवाला दोनों है (34:6-8)

पुराने नियम में शायद किसी अन्य की तुलना में लेख का यह भाग, परमेश्वर के गुणों को अधिक प्रगट करता है। 34:6-8 में कही गई बात लगभग एक मत बन गया। जब परमेश्वर ने मूसा को दर्शन दिया, तो उसने अपने आपको उस रूप में प्रगट किया, जो प्रेम करनेवाला, दयालु और अनुग्रहकारी है, साथ ही वह न्यायी और क्रोध करनेवाला है। वह क्षमा करता है, परन्तु वह “अपराधी को निर्दोष नहीं जाने” देता है। परमेश्वर जैसा है उसे उसी रूप में समझने के लिये हमें उसके स्वभाव के इन दोनों पहलुओं को समझना चाहिए (देखें रोमियों 11:22)। जैसे मूसा करता था हमें भी वैसा ही: उसे दण्डवत् और उसकी आराधना करनी चाहिए!

संसार के साथ कोई वाचा न बाँधना (34:11-17)

परमेश्वर ने इस्राएल से कहा कि वह प्रतिज्ञा किए गए देश के निवासियों को बाहर निकालेगा (34:11)। फिर उसने उन्हें चेतावनी दी कि उन लोगों के साथ वाचा न बाँधना। इस तरह के सम्बन्ध से इस्राएलियों को सच्चे परमेश्वर से दूर कर मूर्तिपूजा की ओर फेर सकते थे (34:12-17)। अविश्वासियों के साथ खतरों में शामिल होकर मसीही का स्वयं का फंदे में फंसने में अधिक उचित साक्ष्य हम नहीं पा सकते - परन्तु यह सिर्फ विवाह के सम्बन्ध तक ही शामिल नहीं है। पौलुस की मसीहियों को चेतावनी उचित है: “अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की

क्या संगति?” (2 कुरि. 6:14)। यीशु के पीछे चलनेवालों को अविश्वासियों के साथ कोई वाचा - कोई वचनबद्ध समझौता, कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ना चाहिए - जो उन्हें परमेश्वर से दूर कर सकते और पाप के मार्ग में ले जा सकते हैं (1 कुरि. 15:33)।

धर्मी जलन (34:14)

परमेश्वर अपने लोगों के लिये धर्मी जलनशीलता के साथ जल उठनेवाला परमेश्वर था। वह नहीं चाहता था कि वे उसके लिये विश्वासहीन ठहरें। क्यों? न केवल उनकी विश्वासहीनता का उसपर बुरा असर होगा, परन्तु यह उनके लिये अच्छा नहीं था! जो लोग उसे छोड़ देते थे, वे अपने सभी आशिषों से वंचित हो जाते थे। परमेश्वर इसी रीति से आज अपने बच्चों के लिये जलन रखता है। वह नहीं चाहता कि हम उसे छोड़ दें और दूसरे देवताओं के पीछे जाएँ क्योंकि ऐसा करना हमारे लिये बुरा है!

परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा रूपान्तरण (34:29-35)

34:29-35 में मूसा का परमेश्वर के साथ भेंट करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकलने लगी। तब उसके चेहरे से निकलती किरणों ने लोगों को प्रभावित किया कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में था और परमेश्वर का प्रतिनिधि और प्रवक्ता था। जब मसीही परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताते हैं, तो परमेश्वर हमें भी रूपान्तरित करता है (रोमियों 12:1, 2; 2 कुरि. 3:18)। वह ऐसे तरीके से ऐसा करता है जो दूसरों के लिये दृश्यमान होने की समान है।

मूसा का चमकता चेहरा, ओढ़नी, और नई वाचा
(34:29-35; 2 कुरि. 3:7-18)

पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर की महिमा जो मूसा के चेहरे से निकलती किरणें थी जिसने यह संकेत दिया कि व्यवस्था तेजोमय (एक घटनेवाली महिमा के साथ) था। परन्तु, उसने तब ध्यान दिया कि नई वाचा कहीं और अधिक तेजोमय है (2 कुरि. 3:7-18)। प्रेरित ने कहा कि मूसा के चेहरे पर डाला गया परदा निकल दिया गया है ताकि जो लोग मसीह में हैं, वे परमेश्वर की महिमा देख सकते हैं। इसलिये, परदा उन लोगों के लिये हटाया गया है जो नहीं समझते कि मूसा की व्यवस्था को हटा दिया गया है। महान आत्मिक सच्चाइयों के लिये वे अन्धे हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]इस अवसर पर परमेश्वर का स्वयं को प्रकट करना इस्राएल में एक मत का कथन बन गया (गिनती 14:18; नहेम्य. 9:17; भजन 86:15; यूहन्ना 4:2)। [2]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 226. [3]कोल ने, कुछ-कुछ भिन्न दृष्टिकोण देते हुए, लिखा, “यहाँ पर ‘चमत्कार’ की प्रकृति

का प्रश्न कनानियों का निष्कासन और इस्राएल को कनान देश का उपहार मिलने के रूप में समझाया गया है” (उपरोक्त, 229)। [4]उपरोक्त, 230. [5]उपरोक्त, 231. [6]उपरोक्त। [7]उदाहरण के लिये, देखें जे. फिलिप हयाट, *एक्सोडस,* द न्यू सेन्चूरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 319-22. [8]इस सम्बन्ध में, जैसा कि दूसरों में, यीशु मूसा के समान था। जंगल में, पहले यीशु की परीक्षा शैतान से हुई थी, उसने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया। (मत्ती 4:2). [9]कोल, 227. [10]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कॉमेट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 462-63.

[11]यीशु का मुँह भी चमकने लगा जब पहाड़ पर उसका रूपान्तर हुआ (मत्ती 17:2)। यह घटना यह सुझाव देता है कि यीशु, परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में “इन अन्तिम दिनों में” (इब्रा. 1:1, 2) “एक [नई और] उत्तम वाचा का मध्यस्थ” (इब्रा. 8:6) है। [12]मूसा के चेहरे पर ओढ़नी का प्रयोग पौलुस ने किया यह स्पष्ट करने के लिये कि कैसे कुछ लोग सुसमाचार को ग्रहण नहीं करते हैं क्योंकि वे यह नहीं देख पाते हैं कि मसीह में पुरानी वाचा हटा दी गई है (2 कुरि. 3:12-18)।